Story of Eklavya and Dronacharya (Guru-Shishya Story)

Guru Purnima Stories

महाभारत की यह कथा एकलव्य और द्रोणाचार्य की है , जो गुरु-शिष्य परंपरा का एक अद्वितीय उदाहरण है। एकलव्य , जो एक निषाद राजकुमार था , द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीखना चाहता था। परन्तु जब उसने द्रोणाचार्य से शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की , तो द्रोणाचार्य ने उसे मना कर दिया, क्योंकि वह एक क्षत्रिय नहीं था।

निराश होकर , एकलव्य ने द्रोणाचार्य की एक मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसे अपने गुरु मानकर उसकी पूजा करने लगा। उन्होंने अपने आत्म-प्रयास और समर्पण से धनुर्विद्या में पूर्णता प्राप्त की। एक दिन , जब द्रोणाचार्य अपने शिष्यों के साथ वन में शिकार करने गए , तो उन्होंने देखा कि एक कुत्ते का मुंह बाणों से बंद कर दिया गया था , लेकिन उसे कोई चोट नहीं पहुंची। जब द्रोणाचार्य ने यह अद्वितीय कौशल देखा , तो उन्होंने जानना चाहा कि यह किसने किया।

जब वे एकलव्य से मिले और उनसे पूछा कि उन्होंने यह कौशल कैसे सीखा , तो एकलव्य ने बताया कि उन्होंने अपनी मूर्ति को अपने गुरु मानकर यह विद्या सीखी है। द्रोणाचार्य ने महसूस किया कि एकलव्य का कौशल अर्जुन के कौशल से भी अधिक हो सकता है। उन्होंने गुरु दक्षिणा में अपना दहिना अंगूठा लगाया , जिससे वह कभी भी धनुष नहीं चला सके। एकलव्य ने बिना किसी मोटीठ के अपने गुरु की इच्छा पूरी की और अपना अंगूठा काट दिया।